जय भगवद्गीते मैय्या जय भगवद्गीते

आरती

जय भगवद्गीते मैय्या जय भगवद्गीते।
कर्म ज्ञान भक्ति की, गंगा सुपुनीते-जय.....

धर्म अधर्म के रण में, जब अर्जुन डोले।
गीता ज्ञान रहस्य, यदुनंदन खोले-जय.....

श्री कृष्ण मुख निकली, वेदमयी वाणी।
ग्रन्थ शिरोमणि गीता, माता कल्याणी-जय.....

ब्रह्म-योग ब्रह्म-विद्या,मन को वश में करे।
आतम ज्ञान बढ़ावे, पाप त्रयताप हरे-जय.....

सत्य धर्म ईश्वर की, भक्ति सिखलावे।
कर्तव्य नीति निष्ठा, मार्ग दिखलावे- जय.....

कुरूक्षेत्र में प्रगटी, वीरों की माता।
करे अनुसरण जो इसका, हरि दर्शन पाता-जय.....

मोह शोक भयहारी, विघ्न विकार हरे।
जीवन जोत जगावे, दूर अन्धकार करे-जय.....

कहत "मधुप" कर वन्दन, आरती जो गावे।
बल भक्ति यश कीर्ति, मुक्ति वर पावे-जय.....।

कवि : सुप्रसिद्ध लेखक एवं संकीर्तनाचार्य श्री केवल कृष्ण 'मधुप' (मधुप हरि जी महाराज) अमृतसर (9814668946)

https://bhajanganga.com/bhajan/lyrics/id/33236/title/jai-bhagvadgite-maiya-jai-bhagvadhite

अपने Android मोबाइल पर BhajanGanga App डाउनलोड करें और भजनों का आनंद ले |